महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के 150 वीं वर्षगांठ समारोह में भाषण

स्थान :- भोपाल दिनांक :- 9 जनवरी, 2012 समय :- प्रात: 11बजे

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित किये जा रहे स्थापना वर्ष के इस कार्यक्रम में शामिल होते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

हमारा देश कला और संस्कृति की दृष्टि से सदियों से एक समृद्ध देश रहा है। इस देश की भूमि पर विभिन्न काल खण्डों में तत्कालीन शासकों ने अनेकानेक नायाब इमारतों की तामीर की। देश का कोई भी प्रदेश हो अथवा कोई भी अंचल हो स्थापत्य कला के अदभुत और चकित कर देने वाले विशाल महल, किले और धर्म स्थान तथा दूसरे अन्य किस्म की इमारतें छतरियाँ आदि पर्यटकों को चकित कर देती हैं। इन भव्य इमारतों का एक-एक पत्थर अपने, अपने काल खण्ड की कहानी और इतिहास आमजन को एक कविता की तरह सुनाता है। दिल्ली का लाल किला और कुतुबमीनार, आगरे का ताजमहल, ओरछा के मंदिर, खजुराहो का कामशिल्प, शांति का प्रतीक सांची का स्तूप, इंदौर और ग्वालियर के राजवाड़े, भोपाल की ताजुल मस्जिद, भोजपुर का शिव मंदिर, ग्वालियर का किला, जैसी हजारों-हजार निर्माण कला के चकित कर देने वाले नगीने पूरे देश में डग-डग पर पाये जाते हैं।

हजारों-हजार साल बीत गये लेकिन कला के इन विलक्षण स्मारकों की आभा आज भी कम नहीं हुई है। बरसों बरस की गर्मी, धूप और बरसात का आज भी इन पर कोई असर नजर नहीं आता है। आज भी देश और दुनिया के लोग भारत में स्थित इन असंख्य कला प्रतिमानों को देखने आते हैं और इनकी भव्यता दिव्यता और कला वैभव देखकर दांतों तले उंगलियां दबा लेते हैं। बहुत बारीक कलाकारी और चित्रकारी देखते ही बनती है। विशाल मीनारें और गुम्बद मन मोह लेते हैं। हर इमारत का सौन्दर्य देख कर आंखें जैसे चौंधिया जाती हैं।

दर्शकों और सैलानियों के मन में यह जिज्ञासा और कौतूहल होना स्वभाविक ही है कि सदियां बीत जाने के बाद भी आज भी ये इमारतें अपने मूल स्वरूप में कैसे खड़ी हैं ...??? अतीत की इन समृद्ध धरोंहरों को वर्तमान में भी ज्यों का त्यों देखने का जो सौभाग्य हमको मिल रहा है

उसके लिए सबसे पहला साधुवाद और प्रणाम का अगर कोई हकदार है तो वह है भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण का दफतर और उसका अमला।

राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए 150 वर्ष पूर्व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना की गई थी। वर्ष 1861 में एक पुरातत्व सर्वेयर सर एलेक्जेंडर कनिंघम के प्रयासों से इस विभाग की नींव रखी गई थी। 1871 में कनिंघम भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण के पहले महानिदेशक बने।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भारत की राष्ट्रीय धरोहरों का अभिरक्षक है। राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातात्विक स्थलों व अवशेषों का रख-रखाव एवं संरक्षण इसका प्रमुख उद्देश्य है। विभाग द्वारा पुरातात्विक अध्ययन, वैज्ञानिक विश्लेषण, पुरातत्व महत्व के स्थलों का उत्खनन, संरक्षित स्मारकों का संरक्षण एवं संवर्धन, पुरातत्व संग्रहालयों का रख-रखाव एवं पुरावशेषों व कला वस्तुओं के अवैधानिक आवागमन पर रोक आदि महत्वपूर्ण कार्य किये जाते हैं।

विभाग द्वारा हमारी धरोहरों के प्रति जागरूकता के लिये अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, जिसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी बोशर्स का प्रकाशन, लघु फिल्म/ वृतचित्रों का निर्माण, स्कूल तथा स्मारकों पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, स्मारकों पर स्कूल के विद्यार्थियों का भ्रमण कराना, समय-समय पर छायाचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन एवं स्मारकों पर इन्टर प्रिटेशन सेंटर आदि जैसे कार्य प्रमुख हैं।

हमारे लिये यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण क अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत की अतीतमय गौरवगाथा को विभिन्न उत्खननों, अन्वेषणों, संरक्षणों एवं अभिलेखों के अनुवादों के फलस्वरूप तथ्यों को विभिन्न आयामों के माध्यम से विश्लेषण करके प्रस्तुत किया गया है। आदि काल से वर्तमान काल तक के मानव इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराने में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अहम भूमिका रही है, जिसमें हमारे पूर्व पुरातत्ववेत्ताओं, यंत्रियों, वैज्ञानिकों, उद्यानविदों, पुरालिपिविदों, सर्वेयर, छायाचित्रकारों एवं मानचित्रकारों का योगदान सराहनीय है जिन्होंने धूप, वर्षा, सर्दी, गर्मी आदि किसी की भी परवाह किये बिना संगठन को एक पहचान दिलाई।

वर्ष 2012 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्थापना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसका औपचारिक शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा गत दिनांक 20 दिसम्बर 2011 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में किया जा चुका है।

मुझे आशा है कि राष्ट्रीय महत्व के इस दायित्व को संपादन आप आगे भी इसी निष्ठा और समर्पण भाव के साथ करते रहेंगे। आपका आभार तो आने वाली पीढ़ियां मानेगी।

जय हिन्द।